❍ 10 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *इन कर्मेन्द्रियो से तो कोई विकर्म नहीं किया ?*

➢➢ *गृहचारी को पार किया ?*

➢➢ *हर कर्म योगयुक्त युक्तियुक्त किया ?*

➢➢ *मोहब्बत के झूले में झूलते रहे ?*

────────────────────────

✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦

〰✧ *किसी भी विघ्न से मुक्त होने की युक्ति है - सेकण्ड में स्वयं का स्वरूप अर्थात् आत्मिक ज्योति स्वरूप स्मृति में आ जाए और कर्म में निमित्त भाव का स्वरूप -* इस डबल लाइट स्वरूप में स्थित हो जाओ तो सेकण्ड में हाई जम्प दे देंगे। कोई भी विघ्न आगे बढ़ने में रूकावट नहीं डाल सकेगा।

✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦ ••☆••✧ ◦ ◦

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *" मैं परमात्मा द्वारा चुनी हुई श्रेष्ठ आत्मा हूँ "*

〰✧ सभी अपने को इस विश्व के अन्दर सर्व आत्माओंमें से चुनी हुई श्रेष्ठ आत्मा समझते हो? यह समझते हो कि स्वंय बाप ने हमें अपना बनाया है? *बाप ने विश्व के अन्दर से कितनी थोड़ी आत्माओंको चुना। और उनमें से हम श्रेष्ठ आत्मायें हैं।* यह संकल्प करते ही क्या अनुभव होगा? अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होगी। ऐसे अनुभव करते हो? अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है वा सुना है? प्रैक्टिकल का अनुभव है वा सिर्फ नालेज है? क्योंकि ज्ञान अर्थात् समझ। समझ का अर्थ ही है - 'अनुभव में लाना'।

〰✧ सुनना, सुनाना अलग चीज है, अनुभव करना और चीज है। यह श्रेष्ठ ज्ञान है अनुभवी बनने का। द्वापर से अनेक प्रकार ज्ञान सुने और सुनाये। जो आधाकल्प किया वह अभी भी किया तो क्या बड़ी बात! *यह नई जीवन, नया युग, नई दुनिया के लिए नया ज्ञान, तो इसकी नवीनता ही तब है जब अनुभव में लाओ।*

〰✧ एक एक शब्द, आत्मा, परमात्मा, चक्र कोई भी ज्ञान का शब्द अनुभव में आये। रियलाइजेशन हो। *आत्मा हूँ यह अनुभूति हो, परमात्मा का अनुभव हो, इसको कहा जाता है - 'नवीनता'।* नया दिन, नई रात, नया परिवार सब कुछ नया ऐसे अनुभव होता है? भक्ति का फल अभी ज्ञान मिल रहा है तो ऐसे ज्ञान के अनुभवी बनो अर्थात् स्वरूप में लाओ।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ कई बच्चे कहते हैं - बहुत सेवा की है ना तो थक गये हैं, माथा भारी हो गया है। तो माथा भारी नहीं होगा। और ही *'करावनहार' बाप बहुत अच्छा मसाज करेगा। और माथा और ही फ्रेश हो जायेगा।* थकावट नहीं होगी, एनर्जी एक्सट्रा आयेगी।

〰✧ *जब साइन्स की दवाइयों से शरीर में एनर्जी आ सकती है, तो क्या बाप की याद से वा आत्मा में एनर्जी नहीं आ सकती?* और आत्मा में एनर्जी आई तो शरीर में प्रभाव आटोमेटिकली पडता है। अनुभवी भी हो, कभी-कभी तो अनुभव होता है।

〰✧ फिर चलते-चलते लाइन बदली हो जाती है और पता नहीं पडता है। जब कोई उदासी, थकावट या माथा भारी होता है ना फिर होश आता है, क्या हुआ? क्यों हुआ? लेकिन *सिर्फ एक शब्द 'करनहार' और 'करावनहार' याद करो, मुश्किल है या सहज है? बोलो हाँ जी।* अच्छा।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ जो बाप के रिश्ते से प्राप्ति होती है वह उसी सेकेण्ड में स्मृति में नहीं आती है, भूल जाते हैं। इसलिए कोई का आधार ले लेते हैं। प्राप्ति कोई कम है क्या? *मुश्किल के समय बाप का सहारा लेना चाहिए, न कि किसी आत्मा का सहारा लेना चाहिए। लेकिन उस समय वह प्राप्ति भूल जाती है। कमज़ोर होते हैं। जैसे डूबते हुए को तिनका मिल जाता है तो उसका सहारा ले लेते हैं।* उस समय परेशानी के कारण जो तिनका सामने आता है उनका सहारा ले लेते हैं, *लेकिन उससे बेसहारे हो जायेंगे- यह स्मृति में नहीं रहता।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)

(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- राजाई पाने की रेस करना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा पतंग अपना डोर मीठे बाबा के हाथों में देकर बेफिक्र होकर आसमान में उड़ रही हूँ... जब से मीठे बाबा के हाथों में अपना डोर थमाया है मैं आत्मा सर्व बन्धनों से न्यारी और प्यारे बाबा की प्यारी बन गई हूँ...* इस पुरानी दुनिया से अपने सारे बंधन, देहधारियों के हाथों में फंसे सारे मोह रूपी डोर तोडकर बंधनमुक्त होकर... ऊपर उड़ते हुए प्यारे बाबा के पास प्यारे वतन में पहुँच जाती हूँ...

❉ *संगमयुग के पुरुषार्थ से नई दुनिया में राजाई पद पाने का ज्ञान देते हुए प्यारे बाबा कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... *अब इस दुनिया का अंत बहुत करीब है... इस खत्म हुई सी दुनिया से मन बुद्धि को निकाल मीठे बाबा की मीठी यादो में लगाओ...* इस वरदानी संगमयुग में ये मीठी यादे सतयुगी सुखो से दामन सजायेंगी... और सुखो भरी राजाई दिलाएंगी..."

➳ _ ➳ *अब घर जाना है की स्मृति से एक बाबा की यादों में समाकर मैं आत्मा कहती हूँ:*- "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... *मै आत्मा इस दुखो से भरी दुनिया से न्यारी होकर ईश्वरीय यादो में धनवान् बनती जा रही हूँ...* मीठे संगम पर मीठे बाबा संग यादो में झूम रही हूँ और श्रेष्ठ संस्कारो को स्वयं में भरती जा रही हूँ..."

❉ *इस धरा से उठाकर धूल से मस्तक मणि जगमगाता सितारा बनाकर मीठे बाबा कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *स्वयं को देह समझ देह की मिटटी में मटमैले हो गए हो... खुबसूरत सितारे हो यह पूरी तरह से भूल गए हो...* अब इस खत्म सी खाली दुनिया से और दिल न लगाओ... नई सुखो भरी खुबसूरत दुनिया में चलने के प्रयासों में जुट जाओ..."

➳ _ ➳ *नई दुनिया के नजारों को अपनी आँखों में बसाकर स्नेह सागर में डबकर मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... *मै आत्मा इस दखदायी

दुनिया से उपराम होकर आपकी मीठी यादो में दिव्य गुणो को धारण कर शक्तिशाली बनती जा रही हूँ...* देवताओ जैसा रूप रंग पाती जा रही हूँ... सुखो भरे स्वर्ग के लायक बनती जा रही हूँ..."

❇ *पुरानी दुनिया के संस्कारों को मिटाकर नई दुनिया में चलने के लिए नए संस्कारों को धारण कराते हुए मेरे बाबा कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... यह संगमयुग ही सच्ची कमाई का युग है... *हर पल हर साँस संकल्प को ईश्वर पिता की यादो में डुबो दो... यह यादे ही सच्ची कमाई बन जाएँगी...* दिव्य गुणो से शक्तियो से सजा कर देवताओ सा सजायेंगी.... और मीठे सुखो और आनन्द से भरपूर दुनिया में राज भाग्य दिलाएंगी..."

➳ _ ➳ *स्नेह सागर की यादों में दिव्य गुणों से सजकर बेनूर से कोहिनूर बन मैं आत्मा कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा संगम युग में पुरानी सी विनाशी दुनिया की हर बात से किनारा कर उज्ज्वल भविष्य की तैयारियों में जुटी हूँ... *सतयुगी दुनिया में ऊँच पद पाकर शान से मुस्कराने के मीठे प्रयत्नों में प्रतिपल जुटी हूँ..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- माया के तूफानों से डरना नही है*"

➳ _ ➳ "सर्व शक्तियों को समय पर कार्य मे लगाने वाली मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं के सामने माया के तूफान तोहफा बन जाते हैं" *बाबा के इन महावाक्यों को स्मृति में ला कर मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट हो कर सर्वशक्तियों का आह्वान करने और स्वयं को सर्वशक्ति सम्पन्न स्वरूप बनाने के लिये मैं सर्वशक्तिवान शिव बाबा की याद में मन बुद्धि को एकाग्र करती हूँ*। अशरीरी बन बाबा की याद में बैठते ही मैं अनभव करती हूँ जैसे

शिव बाबा अव्यक्त ब्रह्मा बाबा की भृकुटि में विराजमान हो कर मेरे सामने आ गए हैं

➳ _ ➳ बाबा की लाइट, माइट जैसे - जैसे मुझ आत्मा पर पड़ रही है वैसे - वैसे मैं अपने लाइट माइट स्वरूप में स्थित होती जा रही हूँ। *अपने लाइट माइट स्वरूप में स्थित हो कर अब मैं अनुभव कर रही हूँ कि जैसे बाबा मुझे अपनी और खींच रहें हैं और मैं डबल लाइट फ़रिशता बन स्वत: ही ऊपर की ओर उड़ रहा हूँ*। सूर्य, चांद, तारागणों से पार अन्तरिक्ष को भी पार करता हुआ उससे भी ऊपर मैं पहुंच गया फ़रिशतो की आकारी दुनिया सूक्ष्म लोक में।

➳ _ ➳ अब मैं देख रहा हूँ स्वयं को सूक्ष्म वतन में। मेरे सामने अव्यक्त बापदादा अष्ट शक्तियों के अलग - अलग स्वरूप में मुझे दिखाई दे रहें हैं। *अष्ट शक्तियों को मुझ में समाहित कर मुझे सर्वशक्ति सम्पन्न स्वरूप बनाने के लिए अब बापदादा एक - एक शक्ति से भरपूर अपनी शक्तिशाली किरणे मुझ फ़रिश्ते में प्रवाहित कर रहें हैं*।

➳ _ ➳ अपना सम्पूर्ण ध्यान इस नश्वर दुनिया से समेट कर मैं अपना संसार केवल एक शिव बाबा को बना सकूँ इसके लिए समेटने की शक्तिशाली किरणों से बाबा मुझे भरपूर कर रहें हैं। *अपनी सहनशक्ति से हर बात को सहन करते हुए हिम्मतवान बन हर परिस्थिति को मैं सहजता से पार कर सकूँ इसके लिए बाबा अब सहनशक्ति से भरपूर किरणे मुझ में प्रवाहित कर रहें हैं*।

➳ _ ➳ जैसे बापदादा सभी बच्चों की सभी बातों को स्वयं में समा लेते हैं। वैसे समाने की शक्ति से भरपूर किरणे मुझ में समाहित कर बाबा मुझमे हर बात को स्वयं में समाने का बल भर रहें हैं। *अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को परख कर हर प्रकार के धोखे से मैं स्वयं को बचा सकूँ इसके लिए बाबा परखने की शक्ति से भरपूर किरणो से मुझे सम्पन्न बना रहे हैं*। माया के अति सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप को पहचान कर उचित समय पर मैं उचित निर्णय ले सकूँ इसके लिए बाबा निर्णय करने की शक्ति से सपन्न किरणे अब मझमे भर रहें हैं।

➽➝ _ ➽➝ विपरीत परिस्थिति में घबराने के बजाए उसका डटकर सामना करने के लिए बाबा अब सामना करने की शक्ति से मुझे भरपूर कर रहें हैं। *एक दो को सहयोग दे, संगठन को निर्विघ्न चलाने के लिए बाबा सहयोग की शक्ति से भरपूर किरणे मुझ में प्रवाहित कर मुझे सहयोगी आत्मा बना रहें हैं*। देह और देह के सम्बन्धों के विस्तार को समेट कर सबको आत्मिक स्वरूप में देखने का पाठ पक्का हो इसके लिए विस्तार को सार में समाने की शक्ति बाबा मुझे दे रहें है।

➽➝ _ ➽➝ अपने आठ स्वरूपों से अष्ट शक्तियों को मेरे अंदर भरकर बाबा ने मुझे अष्ट शक्तियों से सम्पन्न कर दिया हैं। देह अभिमान में आने के कारण मुझ आत्मा में निहित अष्ट शक्तियाँ जो मर्ज हो गई थी वो आठों शक्तियाँ अब इमर्ज हो गई हैं। *बापदादा के आठों स्वरूपों से अष्टशक्तियों को स्वयं में भरपूर करके अब मैं सर्व शक्ति सम्पन्न स्वरूप बन कर वापिस साकारी दुनिया मे लौट आती हूँ।

➽➝ _ ➽➝ *अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर, मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सदा सेट रहते हुए, माया के तूफानों में मुरझाने के बजाए अब मैं समय और परिस्थिति के अनुसार उचित शक्ति का प्रयोग करके सहज ही माया के हर वार का सामना कर, माया पर विजय प्राप्त कर रही हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं हर कर्म योगयुक्त, युक्तियुक्त, करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं कर्मयोगी सो निरन्तर योगी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव मुहब्बत के झूले में झूलती रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा मेहनत से छुट जाती हूँ ।*
✺ *मैं सहजयोगी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बापदादा ने पहले भी कहा है कि जैसे अभी यह पक्का हो गया है कि मैं ब्रह्माकुमारी/ब्रह्माकुमार हूँ। चलते फिरते- सोचते - हम ब्रह्माकुमारी हैं, हम ब्रह्माकुमार ब्राह्मण आत्मा हैं। ऐसे *अभी यह नेचुरल स्मृति और नेचर बनाओ कि 'मैं फरिश्ता हूँ'। अमृतवेले उठते ही यह पक्का करो कि मैं फरिश्ता परमात्म-श्रीमत पर नीचे इस साकार तन में आया हूँ, सभी को सन्देश देने के लिए वा श्रेष्ठ कर्म करने के लिए।* कार्य पूरा हुआ और अपने शान्ति की स्थिति में स्थित हो जाओ। ऊंची स्थिति में चले जाओ। *एक दो को भी फरिश्ते स्वरूप में देखो। आपकी वृत्ति दूसरे को भी धीरे- धीरे फरिश्ता बना देगी। आपकी दृष्टि दूसरे पर भी प्रभाव डालेगी।*

➳ _ ➳ *उमंग-उल्लास है तो सफलता है ही* क्यों नहीं हो सकता है! आखिर तो समय आयेगा जो सब साधन आपकी तरफ से यज होंगे। आफर

करेंगे आपको। आफर करेंगे कुछ दो, कुछ दो। मदद लो। *अभी आप लोगों को कहना पड़ता है - सहयोगी बनो, फिर वह कहेंगे हमारे को सहयोगी बनाओ। सिर्फ यह बात पक्की रखना। फरिश्ता, फरिश्ता, फरिश्ता! फिर देखो आपका काम कितना जल्दी होता है।* पीछे पड़ना नहीं पड़ेगा लेकिन परछाई के समान वह आपेही पीछे आयेंगे। बस सिर्फ आपकी अवस्थाओं के रुकने से रूका हुआ है। *एवररेडी बन जाओ तो सिर्फ स्विच दबाने की देरी है, बस। अच्छा कर रहे हैं और करेंगे।*

✺ *ड्रिल :- " 'मैं फरिश्ता हूँ' - यह नेचरल स्मृति और नेचर बनाना"*

➳ _ ➳ *सलोनी सी चाँदनी सुबह में छत पर बैठी मैं आत्मा अपने चंदा बाबा की यादों में मगन हूँ...* बाबा से बड़ी मीठी प्यारी-प्यारी बातें कर रही हूँ... ऐसा लग रहा है जैसे इस धरती ने चमकीले तारों की चादर ओढ़ रखी हो... और *मेरे चँदा बाबा से शीतल-शीतल किरणें मुझ आत्मा पर पड़ रही है... अतिइन्द्रिय सुख के झूले में, मैं आत्मा झूल रही हूँ...* चँदा बाबा से एक-एक किरण मुझ आत्मा में समा रही है... मैं आत्मा बेहद भरपूर और शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ... *उस एक में समाया हुआ अनुभव कर रही हूँ...* तभी एक बहुत बड़ा सोने-हीरों से जड़ा एक दरवाजा मुझ आत्मा के सामने आता है... *जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है, फरिशतों की दुनिया...*

➳ _ ➳ अचानक ऐसा अनुभव होता है जैसे बाबा कह रहें हो अन्दर आओ मीठे बच्चे, ये सुन कर मैं आत्मा इस दरवाजें की तरफ आगें बढ़ती हूँ... और अचानक दरवाजा अपने आप खुल जाता है... *चारों तरफ सफेद रंग की लाइट ही लाइट है... सामने फरिशतों के बादशाह ब्रह्मा बाबा और उनकी भृकुटि में शिव बाबा बड़े से रंग-बिरंगे फूलों से बने चमकीले रंग के झूले पर बैठे नजर आते है...* जैसे ही मैं आत्मा अन्दर जाने के लिए कदम बढ़ाती हूँ... उसी पल बाबा की दृष्टि भी मुझ आत्मा पर पड़ती है... जैसे ही बाबा की वरदानी दृष्टि मुझ आत्मा पर पड़ती है... *बाबा मुझ आत्मा को फरिशता भव का वरदान देते है... और बाबा की आँखों से सफेद रंग की लाइट मुझ आत्मा पर गिरने लगती है...* और धीरे-धीरे तत्वों से बना शरीर परिवर्तन होकर लाइट का बनता जा रहा है...

➳ _ ➳ देख रही हूँ मैं आत्मा इस परिवर्तन की प्रक्रिया को... अब मैं आत्मा देख रही हूँ अपने *इस फरिशता स्वरूप को कितना अलौकिक कितना प्यारा मुझ आत्मा का यह स्वरूप है...* कितना हल्कापन कितना आंनद महसूस हो रहा है... अब मैं फरिशता उड़ कर पहुंच जाता हूँ बाबा के पास... *बाबा मुझ फरिशते को गोद में ले लेते है... और मेरे सिर पर हाथ फेरते है... अनुभव कर रहा हूँ मैं फरिशता बाबा के इस वरदानी हाथ को अपने सिर के ऊपर,* बाबा मुझ फरिशते का हाथ पकड़ते है और मुझे इस फरिशतों की दुनिया की सैर कराने लग जाते है... *चारों तरफ लाइट की ड्रेस वाले फरिशते घूम रहे है... रंग-बिरंगे लाइट के फूल चारों ओर है...*

➳ _ ➳ वही लाइट की रंग-बिरंगी तितलियाँ फूलों पर मड़रा रही है... *तभी बाबा मुझे गोदी में उठा लाइट के झूले पर बिठा झूला झूलाते है... मेरे ऊपर रंग-बिरंगे लाइट के फूल रूपी शक्तियों की बारिश बाबा कर रहे है...* तभी एकदम से झूला रूक जाता है बाबा भी झूले पर आकर बैठते है... *और मुझ फरिशतें का हाथ हाथों में लेकर दृष्टि देते है... मैं आत्मा महसूस कर रही हूँ, बाबा के अव्यक्त शब्दों को जो बाबा इस वरदानी दृष्टि द्वारा कह रहे है... बच्चे जाओ अपने विश्व कल्याण के कर्तव्य को पूरा करो...* बाबा हर पल आपकी छत्रछाया बनकर साथ है... *मैं फरिशता भी बाबा की आज्ञा को सिर-माथे रख, बाबा से वरदानी दृष्टि लेकर साकारी दुनिया में अवतरित हो जाता हूँ श्रेष्ठ कर्म करने, परमात्म सन्देश देने...*

➳ _ ➳ देख रहा हूँ मैं लाइट का फरिशता स्वयं को इस साकारी दुनिया में, उमंग-उत्साह के साथ *मैं फरिशता सबको बाबा का सन्देश दे रहा हूँ... हर कर्म मैं फरिशता बाबा की याद में बड़े उमंग-उत्साह से कर रहा हूं...* हर कर्म श्रेष्ठ हो रहा है... हर कार्य में सफलता मिल रही है... *जो भी आत्माएँ सामने आ रही है सभी को फरिशता स्वरूप में देख रहा हूँ... मुझ फरिशते की वृति-दृष्टि से ये आत्माएँ भी परिवर्तन हो रही है... मुझ फरिशते की वृत्ति धीरे-धीरे इन्हें भी फरिशता बना रही है... मैं फरिशता अपनी इस फरिशता जीवन को नेचुरल अनुभव कर रहा हूँ...* इस प्रकार मैं फरिशता हूँ ये पाठ पक्का हो गया है... आत्माएँ स्वयं आफर कर रही है, आप हमें सहयोगी बनाओं, ये साधन आप

यूज करो... *मैं फरिशता अनुभव कर रहा हूँ... सर्व कार्य जल्दी समपन्न हो रहे हैं... हर कार्य में सहज सफलता मिल रही है... शुक्रिया मीठे बाबा शुक्रिया*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔